पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

रचनाकार :-
राधा गोयल

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाधाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - राधा गोयल

कहीं अति वृष्टि और बाढ़ तो कहीं भयंकर सूखा

आजकल तो हर रोज पूरे विश्व में कहीं भयंकर आग की खबरें पढ़ने को मिल रही हैं तो कहीं बारिश के कारण बाढ़ ने तबाही मचाई है तो कहीं सूखे से लोगों की जान पर बन आई है।कहीं पहाड़ और सड़कें दरक कर गिर रहे हैं तो कहीं ग्लेशियर पिघल रहे हैं। जिन देशों में कभी मौसम गर्म नहीं रहता था, लोग गर्मियों में वहाँ घूमने जाते थे।अब तो उन देशों में मौसम की गर्मी ने कहर ढा रखा है।
या तो बारिश आती नहीं है या आती है तो इस कदर आती है कि बहुत कुछ बर्बाद करके चली जाती है। बारिश के मौसम में बारिश नहीं आई और अब कई दिन से बारिश आफत बनकर आ गई है। कई गाँवों में इतना पानी बरसा कि ग्रामीण हलकान हो गए। जब पानी आबादी क्षेत्र में घुसा तो ग्रामीणों ने सहायता की गुहार लगाई। चार दिनों में अकेले नगीना खंड में इतनी बारिश हुई और खेतों में पानी जमा हो गया और आबादी क्षेत्र में भी प्रवेश कर गया। पानी दो फिट से अधिक ऊंचाई पर था। पानी निकालने का रास्ता नहीं होने के कारण और बारिश लगातार होने के कारण स्थिति खराब हो सकती थी।

असम बाड़मेर 300 गांव दफनः मलबे में सड़ रहे शव

पाई-पाई बचाकर पक्का मकान बनाया था। सब मिट्टी में मिल गया। बच्चों के साथ सड़क किनारे प्लास्टिक के तंबू में जीवन कट रहा है। असम: केशव सागर जिले में 300 से ज्यादा गांव पिछले महीने आई विनाशकारी बाढ़ में लगभग दफन हो चुके हैं। सैकड़ों मवेशियों की लाश मलबे में सड़ रही हैं। इनकी दुर्गंध पूरे इलाके में फैलने लगी है। कुछ लोग इस तबाही की तुलना **1950** में आई विनाशकारी बाढ़ से कर रहे हैं तब **15 अगस्त 1950** को **8.6** तीव्रता वाले भाषण भूकंप के कारण बाढ़ आई थी। **532** मौतें हुई थी। इस बार मृतक **102** हैं लेकिन बाढ़ से तबाही का मंजर **76 साल** पहले से ज्यादा है।

इस बार बाढ़ का कारण स्थानीय लोग इसे मानव निर्मित आपदा कह रहे हैं। उन्होंने बताया कि शिव सागर जिला नगालैंड बॉर्डर से सटा हुआ है। यहाँ कोयला सिंडिकेट और ओपन कास्ट माइनिंग के चलते पहाड़ों को बेदर्दी से काटा गया। इससे पहाड़ों पर गड्ढे बन गए। बारिश का पानी जमा होने से यहाँ झील बन गई। भारी दबावों में झीलें टूटीं और बाढ़ आई।

ऐसा क्यों हो रहा है, इन कारणों पर विचार करने की बहुत जरूरत है। उनके लिए ऐसे उपायों को भी अमल में लाना पड़ेगा जिससे बार-बार ऐसी विनाश लीला ना हो।

कुदरत की चेतावनी

उत्तराखंड में उत्तरकाशी में आई आपदा प्रकृति की एक और गंभीर चेतावनी है। यह बताती है कि पर्यावरण और विकास के बीच संतुलन साधने की कितनी जरूरत है। देश के पहाड़ी राज्यों खासकर उत्तराखंड को लेकर ऐसी नीति चाहिए जिससे पहाड़ और इंसानों के बीच संतुलन बना रहे।

बड़ी हानि:

उत्तरकाशी के धराली गाँव में खीरगंगा नदी के ऊपरी क्षेत्र में बादल फटा और फ्लैश फ्लड ने रास्ते में आने वाली हर चीज को अपनी चपेट में ले लिया। प्रभावित इलाकों से आ रहे वीडियो दिल दहलाने वाले हैं। उन दिनों चार धाम यात्रा सीजन चल रहा था और यह गाँव गंगोत्री वाले रास्ते पर पड़ता है। श्रद्धालुओं के रुकने का यह एक अहम पड़ाव है। ऐसे में जान माल की बड़े पैमाने पर हानि हुई।

लगातार आफत

हाल के वर्षों में उत्तराखंड इस तरह की प्राकृतिक आपदाओं के केंद्र में रहा है। **2021** में चमोली जनपद में नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान के पास एक **ग्लेशियर टूटकर** गिर गया था। इसकी वजह से धौली गंगा नदी में अचानक बाढ़ आ गई और तपोवन विष्णु गार्डन पन बिजली परियोजना में काम करने वाले कई श्रमिकों को जान गंवानी पड़ी। इसी तरह **2023** की शुरुआत में एक और धार्मिक पर्यटन स्थल जोशी मठ में भूस्खलन ने एक बड़ी आबादी को विस्थापित कर दिया।

खतरनाक स्थिति

साल **2013** में **केदार घाटी में भयानक तबाही हुई**। फिर ऋषिगंगा में भयंकर बाढ़ आई। वहाँ भी सुरंग बनाई जा रही थी।अकेले उत्तराखंड में अभी तक छोटी बड़ी ऐसी कई प्राकृतिक आपदाएं आ चुकी हैं। सवाल यहाँ आकर रूकता है कि पहाड़ से छेड़-छाड़ कब रुकेगी ? आरोप है कि उत्तराखंड में चल रहे बेशुमार पावर प्रोजेक्ट्स ने पहाड़ों को खोखला कर दिया है। इसमें बढ़ती आबादी, लाखों पर्यटकों के बोझ, अनियंत्रित निर्माण और घटती हरियाली को मिला दीजिए तो स्थिति विस्फोटक बन जाती है ।

अनियंत्रित निर्माण

बादल फटना प्राकृतिक घटना है जिस पर इंसानों का जोर नहीं। लेकिन, यह भी तथ्य है कि पानी निकलने के रास्तों, नालों के मुहानों पर कंक्रीट के बड़े-बड़े स्ट्रक्चर खड़े हो चुके हैं। तमाम जगहों पर जिन रास्तों से पानी को बहना था, वहाँ इंसान बस चुका है। यह जान-बूझकर आफत बुलाने जैसा है।

संभलने की जरूरत

उत्तराखंड को लेकर यह बहस करीब **5 दशक** पुरानी है कि विकास किस कीमत पर होना चाहिए। साल **1976** में गढ़वाल के तत्कालीन कमिश्नर एमसी मिश्रा की अध्यक्षता में गठित कमेटी ने जोशीमठ को बचाने के लिए फौरन कुछ कदम उठाने की सिफारिश की थी। इनमें संवेदनशील जोन में नए निर्माण पर रोक और हरियाली बढ़ाना प्रमुख था। **49 साल** बाद आज वह रिपोर्ट पूरे पहाड़ के लिए प्रासंगिक हो चुकी है।

उत्तराखंड की नीति घाटी में **10 अगस्त 2026** को बादल फटा। तेज बारिश हुई और पानी पहाड़ से बड़े-बड़े पत्थरों का मलबा लेकर नीचे की ओर बहने लगा। इससे तमक नाम का नाला उफान पर आ गया। इसका बहाव इतना तेज था कि ज्योर्तिमठ- मलारी मोटर मार्ग पर बना वैली ब्रिज महज **13 सेकंड** में टूट कर ताश के पत्ते की तरह बह गया। **35 फीट** लंबे इस ब्रिज को बॉर्डर रोड ऑर्गेनाइजेशन ने करीब **17 टन स्टील** से बनाया था। यह भारत चीन सीमा के नजदीक है।

पिछले साल 31 अगस्त को इसी जगह बने पुल को नाला बहा ले गया था। इसके बाद स्टील का नया वैली ब्रिज बनाया गया था।

अभी नेपाल मैं आई भीषण बाढ़ के बारे में सभी ने पढ़ा होगा। लगभग सभी कुछ जमींदोज हो गया है। अब यह बाढ़ बिहार की तरफ बढ़ गई है। न जाने क्या होगा?

बिहार में कुदरत अपना कैसा कमाल दिखा रही है। कहीं तो बेहिसाब पानी बहकर कहर बरपा रहा है तो कहीं कुछ प्रांत एक बूँद पानी के लिए भी तरस रहे हैं। प्रदेश में **14 जिलों** में बाढ़ का प्रकोप है। खेत डूब रहे हैं। फसलें बर्बाद हो चुकी हैं। 82 प्रखंडों की 491 ग्राम पंचायत में लगभग 35.89 लाख आबादी बाढ़ से प्रभावित हुई है। पटना में गंगा और पुनपुन का जलस्तर हालांकि धीरे-धीरे घट रहा है लेकिन पानी कम होने की रफ्तार बहुत धीमी है।

दूसरी तरफ बाकी बिहार में अब तक औसत से करीब 35% तक कम बारिश हुई है। मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, शिवहर, पूर्वी चंपारण मधुबनी समस्तीपुर जहानाबाद, भागलपुर, पटना और दरभंगा में हालत खराब है।यहाँ फसलें जल चुकी हैं। पीने के पानी का भी संकट है। पानी के अभाव में बलुई दोमट मिट्टी वाले खेतों में बड़ी-बड़ी दरारें पड़ गई हैं। धान की खड़ी फसल को बचाने के लिए किसान निजी पंप सेटों और महंगे डीजल के सहारे दिन-रात जद्दोजहद कर रहे हैं।

यदि सितंबर के अंत तक स्थिति नहीं सुधरी तो खरीफ की फसल तो तबाह हो ही जाएगी। मिट्टी में नमी न बचने से आगामी रबी फसलों की बुवाई भी बुरी तरह प्रभावित होगी।
हमने विकास तो बहुत किया किंतु सोच समझ कर नहीं किया। यह नहीं सोचा कि हम जब पहाड़ों पर बड़े-बड़े पुल बना रहे हैं ,भवन बना रहे हैं और होटल के निर्माण कार्य चल रहे हैं; लेकिन पानी निकासी का कोई उचित प्रबंध नहीं है।
यदि जल निकासी का उचित प्रबंध नहीं होगा तो पानी कहीं ना कहीं से तो पूरे आवेग के साथ निकलेगा और भारी तबाही मचाएगा। ऐसी योजनाएं बनाते समय यह सोचना भी बहुत जरूरी है कि उससे वास्तव में विकास होगा या विनाश होगा। अब जहाँ-जहाँ विनाश हुआ है, उन लोगों ने पाई पाई जोड़कर अपना घर बसाया था जो सब कुछ एक झटके में तबाह हो गया। न जाने जिंदगी को पटरी पर आने में कितने वर्ष लगेंगे।
हम दिल्ली में ही वर्षों से देखते आ रहे हैं कि थोड़ी सी बारिश से हमारी गलियाँ तालाब बन जाती हैं। गुरुग्राम के बारे में भी सब ने ही देखा होगा कि किस तरह से सड़कों पर गाड़ियाँ पानी में डूबी हुई थीं जबकि गुरुग्राम तो बहुत आधुनिक मैट्रो शहर है इसके बावजूद यह हाल? न जाने बाढ़ नियंत्रण विभाग ए.सी कमरे में बैठकर क्या योजनाएं बनाता है कि आज तक बाढ़ पर नियंत्रण नहीं हो सका।हर वर्ष बाढ़ आती है और लाखों जिंदगियों को निगल जाती है।

-राधा गोयल

लेखक परिचय

नाम – राधा गोयल
ग्राम - विकासपुरी, दिल्ली

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ........**राधा गोयल**........जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था

डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक...   लेखन से परिवर्तन तक...